जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
☎ : ०२० - २४२१५५८३, मो. : ८२६२०५६४८०
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१
संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
: सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

❖ वर्ष ५१ वे ❖ अंक ६ वा ❖ फेब्रुवारी २०२० ❖ वीर संवत २५४६ ❖ विक्रम संवत २०७६

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● अंतिम महागाथा - १५ : कर्मों की बिकट घाटियाँ	१५	● प्राकृत भाषा विकास मंडल	४९
● आत्म ध्यान : ४ - आत्मरंजन है ध्यान	२१	● उत्तम धंदा कशाला म्हणायचा ?	५१
● ऐसी हुई जब गुरु कृपा - औगुण कीरांई मत देख	२४	● चलती रहे जिंदगी : कभी अलविदा ना कहना	६१
● पुणे पांजरपोळ ट्रस्ट, भोजापूर - प्रतिष्ठा	२७	● जागृत विचार	६५
● प्राकृत डिक्शनरी - आठवा खंड प्रकाशन	२८	● चतुर्विध संघ को जागने का समय आ गया है	६६
● आनंद संस्कार शिक्षा अभियान	२९	● 'आवश्यक सूत्र' प्रतियोगिता, अहमदनगर	६९
● राष्ट्रीय जनगणना २०२१	३१	● पी. एम. मुनोत मेमोरियल ट्रस्ट - अहमदनगर	७०
● कव्हर तपशील	३२	● आनंदऋषिजी नेत्रालय - अहमदनगर	७१
● सुखी जीवन की चाँबिया : पंद्रह सद्गुण उपासना - १ : धर्म श्रवण	३७	● श्री चंपालालजी गांधी - पाथर्डी	७३
● मृत्यु को महोत्सव बनाएँ : मनुष्य का भ्रम	४१	● श्री. विलासजी लोढा - अहमदनगर	७३
● सफल होना है तो : सफलता के सीक्रेटस्	४२	● BJS मोफत प्लास्टिक सर्जरी शिबीर, पुणे	७४
● सबसे गहरी इच्छा - जीवैषणा	४३	● श्री. विजयकुमार मर्लेचा, पुरस्कार - पुणे	७४
● बीना पुण्य के सुख नहीं	४५	● गुंदेशा परिवार, पुणे - ५ दीक्षा	७५
● पसंदगी की रामायण	४७	● श्री. घेवरचंदजी कटारिया, पुणे	७५
		● डायमंड डायरी	७९

- श्रीमती निर्मला छाजेड, पुणे – अध्यक्षपदी ८५
- श्री गुरु गौतममुनी मेडिकल चॅरिटेबल सेंटर, पुणे – उद्घाटन ८७
- ॲड. मंगेश लुनिया – न्यायाधीश पदी ८७
- सुर्यदत्ता ग्रुप – पुणे ८८
- जनगणनेचा ३४ प्रश्नांचा अर्ज ऑन लाईन उपलब्ध ८८
- महासती मंजूश्रीजी म.सा. अमृत महोत्सव, पुणे ८९
- प्रेमावरती बोलू काही व्हॅलेन्टाईन डे निमित्त ९१
- फ्लेमिंगो ट्रान्सवर्ल्ड – सॅमसंग टुर्स, पुणे ९५
- हास्य जागृति ९६
- सात प्रश्न ९७
- दीक्षा महोत्सव – बिबवेवाडी, पुणे ९९
- चारोळ्या १००
- गुरु आनंद तीर्थ, चिचांडी वर्षीतप पारणा १०१
- विविध धार्मिक, सामाजिक व राजकीय बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत ५० रुपये.

- www.jainjagruti.in
- www.facebook.com/jainjagrutimagazine

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. • 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/मनिऑर्डर/ड्राफ्ट/AT PAR चेक/ पुणे चेकने / RTGS / SBI Online / Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी.

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA **Branch : Market Yard, Pune 37.**
Current A/c No. : 10521020146 **IFS Code : SBIN0006117**

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे - ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे - ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

जैन जागृति मासिकात जाहिरात व वर्गणीसाठी संपर्क करा

फोन (०२०) २४२१५५८३ **मो. संजय:९८२२०८६९९७ सुनंदा:९४२३५६२९९१, www.jainjagruti.in**
Email : jainjagruti1969@gmail.com ● Press Email : prakash.offset@rediffmail.com

◆ जैन जागृतिचे प्रतिनिधी ◆

- **भोसरी, चिंचवड, निगडी –** श्री. चांदमलजी लुंकड – फोन : २७११९९४९, मो. ९९२१९११९४०९, ९४२२८३२८४९
- **पुणे शहर ❖ जळगाव –** श्री. अनील कुचेरिया, मो. : ९७६३६४५०५५
- **गुरूवार पेठ, पुणे –** श्री. जैन पुस्तक भंडार, फोन : २४४७२९५८
- **धनकवडी, पुणे –** श्री. सुरेंद्र हिरालालजी बोरा, मो. ७५८८९४३०१५ / ९३७३६८२१३७
- **महावीर प्रतिष्ठान, पुणे –** निलम रमेशचंद्र शहा, मो. ९०९६८००५४७
- **सदाशिव पेठ परिसर, पुणे –** सौ. स्वाती राजेंद्रजी कटारिया, मो. : ९८८१२०४३९०
- **वडगाव शेरी, पुणे –** सौ. भारती सुभाष नहार, मो. : ९८९०२७८३४६
- **वडगाव मावळ, पुणे –** श्री. राजेंद्र बाफना, मो. ९८२२२६२९०१
- **औंध, पाषाण, हिंजवडी, सांगवी, थेरगाव –** श्री. शिरिषकुमार शांतीलालजी डुंगरवाल, मो. ९०२१३००५५९
- **दापोडी, पुणे –** श्री. प्रवीण झुंबरलालजी चोरडिया, मो. ९९२२७५७७०६
- **नांदेड सिटी, पुणे –** श्री. प्रकाशजी हरकचंदजी बोथरा, मो. ९०११९८३६६६ / ७२७२९७२९९९
- **दौंड, श्रीगोंदा –** श्री. रविंद्र चेनसुखलालजी गुगळे – ९८९०७२३४०२
- **अहमदनगर –** श्री. महेश एम. मुनोत– मो. ९४२०६३९२३०
- **जामखेड, आष्टी व कर्जत तालुका –** श्री. प्रफुल शांतीलालजी सोलंकी – मो. ९४०३६८५६७७, ८०८७७०००७०
- **बीड –** श्री. महावीर पन्नालालजी लोढा, मो. ९४२०५५६३२५
- **सोनई –** श्री. मदनलालजी सी. भळगट – फोन : ०२४२७-२३१४६१, मो. ९८८१४१४२१७
- **औरंगाबाद –** श्री. सुभाषचंदजी मांडोत-फोन: (०२४०) २३५३४३८ मो.: ९४२२७०५९२१
- **कुर्डुवाडी, बार्शी –** श्री. सुभाष मोहनलाल लुणिया, मो. ८७९३००००८१
- **मुंबई** खारघर– श्री. मदनलालजी गांधी-मो. ९८२०५३६७९३
- **नाशिक –** श्री. पुखराजजी बाबुलालजी जैन (कवाड) फोन:०२५३-२३११००८,मो.९४२३९३९९९०
- **नाशिक –** मनोज लखीचंदजी खिंवसरा, रविवार पेठ, नाशिक. मो. ९७६२२२१५०५
- **गारगोटी** (जि. कोल्हापूर) श्री. श्रीकांत राजाराम शहा, मो. ९८६०१०७७९२
- **श्रीरामपूर –**श्री. निलेश सुवालालजी हिरण, मो. : ९३२६९७२७४७
- **बारामती–** डॉ. महावीर छगनलालजी संचेती, फोन : ०२११२-२२३८०७ मो.:९३२५००४९५०
- **अमळनेर, जि. जळगाव –** श्री. मयुरकुमार केवलचंदजी जैन, मो. ९४२२६५७१७७
- **धुळे –** श्री. चेतन सतिष कोटेचा, सुभाषनगर, धुळे, मो. ९४०४१९२४३४, ९४२०६६१४२६
- **शहादा, जि. नंदुरबार –** श्री. मनोजकुमार विरचंदजी बाफना, मो. ९४२१५२९६२६
- **इचलकरंजी, जि. कोल्हापूर –** श्री. पोपटलालजी बिसनदासजी गुगळे, मो. ९८२२६५०९९८
- **मिरज, जि. सांगली –** श्री. राजेंद्र वसंतलाल शहा, मो. ९४२११०५७४८
- **कोल्हापूर –** सौ. लता कांतीलालजी ओसवाल, मो. ९४२३२८६०१४ फोन.०२३१-२६९५४३३
- **सातारा व सातारा जिल्हा –** श्री. जयकुमार कांतीलाल शहा, वाठार, मो. – ७५८८५६१३२०, ९८५०१८२६४४

अंतिम महागाथा

लेखक : प्रबुध्द विचारक पू. श्री. आदर्शऋषिजी म.सा.

(क्रमशः –६)

भाग एक – राजकुमार वर्धमान

१५. कर्मोंकी बिकट घाटियाँ

महायोगी महावीर जैसे दृढप्रतिज्ञ ही ऐसे अद्‌भूत संकल्प कर सकते है । साधारण साधक साधना की इस ऊँचाई को छू नहीं सकता । यह संकल्प याने कठोर साधना, निर्भयता, निरालंबन, निस्पृहता, निरपेक्षभावना का प्रतीक है । कायर संकल्प नहीं कर सकता । कमजोर पालन नहीं कर पाता । दृढधर्मी करने जाए तो संकल्प को विकृति, जडता का रुप दे देता है । निर्मल मन संकल्प करता है ।

महावीर सुबह होते ही आश्रम को छोड देते है । अभी तो वर्षाऋतु का एक अध्याय ही बीता था । आकाश में जलधरोंने अभी भी डेरा डाल रखा है । उन सैनिकों की तरह जो कभी भी लड़ने को तैयार रहते हैं । घने कृष्ण नीलवर्णी मटमैले बादलोंने सूर्य की किरणों को धरतीपर आनेसे पूर्व ही उन्हें बंदी बना लिया है । वर्षारानी ने बरस–बरसकर सारी सृष्टि को रस, रंग, रुपसे मानों नवयौवन प्रदान किया है । जल से भीगी–भीगी पृथ्वीने हरियाली की चादर ओढली थी । जहाँ तक दृष्टि पडती क्षितिज के सीमांत तक बहुत सुहावना लग रहा है ।

यह जल ही इस पृथ्वी के लिए अमृत है । पृथ्वी ही इसे आकाश को प्रदान करती है । धरती की गोद में से सूर्यताप के सहारे जल आकाश में उड़ान भरता है । आकाश के साथ रहकर वापस धरती की तरफ दौडता है । वापस आनेके लिए कितना उतावला हो जाता है। कितने विविध रुप लेता है । कितना शोर मचाता है ।

कभी किसी तेज धावक की तरह दौडता है । कभी नन्हें बालक की तरह रुक–रुककर बरसता है । कभी नवयौवना की चालसे धीमे–धीमे आता है । कभी चोर की भाँति दबे कदमों से अचानक टपक पडता है। कभी पवन के संग अठखेलियाँ करता हुआ वृक्षों को झंझोडता है । कभी पहाडों के संग टकराता है । कभी बिजली रानी के साथ रौद्ररुप धरकर सबके हृदयोंको कंपा देता है । फिर कभी सयाने बालक की तरह शांत, माँ की दुलार की तरह फुहार बनकर चला आता है । कभी किसी युगल प्रेमी की भाँति रिमझिम–रिमझिम सावन बन जाता है । आषाढ में अवढर दानी नहीं बन सकता तो भादरवा में तो झमाझम कर्ण जैसा दानी बन जाता है । और कभी तो मम्मणसेठ की भाँति इतना कंजूस बन जाता है कि किसानों और प्यासों का कंठ सूखाकर आँखोंसे बरसने लगता है । ये बहुरुपिया है ।

और इतनी ऊँचाई से यात्रा करके आनेपर भी रुकता कहाँ है । धरती से मिलन के बाद भी वह दौडता रहता है, सच में इस सृष्टि में सच्चा यात्री जल ही है, धरती के गर्भ में गहरे तक उतरकर बरसों तक शांत पडा रहता है । वृक्ष की नसों–नसों में बहता है । कहीं प्रपात, कहीं झरना, कहीं नदी, कहीं नाला–पोखर बन जाता है । अंत में विराट समुद्र के रुपमें जीवन दाता बनता है ।

महावीर अस्थिकग्राम की ओर पगडंडी के सहारे चले जा रहे है । पक्षियोंने अपना डेरा नहीं छोडा है । वे भी हवा में से संकेत पा रहे है कि आज आसमान खूब बरसेगा । आज दाना चुगने के लिए बाहर जाना ठीक नहीं है । पर यह कौन देवता दिशाओं को चिरता हुआ चला आ रहा है ? इस देवता के सिवा दूर दूर तक कोई

दिखाई नहीं देता । नीला अंधेरा चहुँ ओर छाया हुआ है । उजाला कमजोर दिखाई दे रहा है । हवा रुकी हुई है ।

महावीर देख रहे है चारों तरफ से घनघोर घटाएँ घिर आई है । ये घटाएँ बरसने को तैयार है । वे सोचते है आश्रम में था वहाँ भी निरंतर बरसात होती रही । वहाँ भी खूब ध्यान लगा, अब तो ध्यान करने में अधिक आनंद आएगा । वे सोच रहे है और बूँदा-बांदी शुरु हो जाती है । आसमान अचानक फट पडा झम-झम बरसने लगा । महावीर दूरतक देखते है तो घनी झाडियों के बीच धूँधला सा कोई मंदिर जैसा दिखाई देता है । मंदिर की तरफ तेजीसे कदम बढने लगे ।

चलते कदम मंजिल को आसान बना देते है । रुके हुए कदम कठिन बन जाते है ।

अस्थिकग्राम नाम के अनुरुप ही है । गाँव के पहले शमशान घाट है । जहाँ चारों तरफ हड्डियाँ बिखरी हुई है । शमशान के पार याने लगकर खंडहर बना मंदिर स्पष्ट दिख रहा है । गाँव के लोगोंने अपने भय का प्रतीक किसी यक्ष का मंदिर बनाया है ।

महावीर उस मंदिर के सामने पहुँचे । अचानक अंधेरे में जैसे उजाला हो गया हो, कोई देवता धरतीपर उतर आया हो, आश्चर्य में डाल दे, स्तब्ध कर दे ऐसा दृश्य मंदिर से निकलते हुए पुजारी ने देखा । पुजारी के साथ गाँव के कुछ लोग भी है । वे पूजा करके गाँव की ओर लौटने की तैयारी में है । घर जाने को उतावले हो रहे है । आसमान बरस रहा है । बाहर में देवता को देख अचंभित हुए । आश्चर्य से बाहर आने के बाद प्रणाम करके पूछा, ''देवता ! आप कहाँ से आये है इस भयानक बारिश में ?'' महावीर मौन रहे । ''आप क्या चाहते है ?'' मुझे कुछ नहीं चाहिए मंदिर के कोने में ध्यान करना चाहता हूँ इशारे से उन्होंने बताया ।

नहीं ! नहीं ! नहीं ! वे भयभीत दृष्टि से एक साथ बोल उठे, ''यहाँ नहीं सामने ही गाँव देख रहे है ?'' पुजारी ने इशारे से दिखाया, वहाँ पधारे । हमारे साथ चलिए हमें कृतार्थ कीजिए, प्रसन्नता होगी । यह स्थान रहने योग्य नहीं है । यह एक आतंकी, निष्ठुर, अधम, क्रूर यक्ष का रात्रि निवास स्थान है । आप देख रहे है । मंदिर खंडहर हो चुका है । मंदिर के आसपास की दशा देखिए । ये शमशान है । यहाँ मुर्दे जल रहे है । वह राक्षस यहाँ ठहरनेवाले को जीवित नहीं छोडता, वह क्रूरकाल है । यहाँ जो भी ठहरा, सवेरा होनेपर उसके अस्थिपंजर ही शेष रहते है । वह क्रूरकर्मा है उसने हम गाँववालों का जीना कठिन, दुखमय बना दिया है ।''

''आप हमारी विनंती स्वीकार कीजिए । गाँव में चलीये । व्यर्थ ही मौत को आमंत्रण न दीजिए ।'' निर्भययोगी महावीर उन्हें दृष्टि से ही शांत करते हुए, विश्वास देते हुए मानो कह रहे है, ''डरने की क्या बात है ? रहना यहीं है ।''

साधना कसौटी चाहती है । अपने अस्तित्व से भय को पूर्णत: निकाल दिया है, ऐसे भयविजेता महावीर मंदिर की दिशा में बढ गये ।

आश्चर्य मिश्रित भयसे देखते हुए पुजारी सहित सभी गाँव की दिशा में तेजीसे चल दिये । साथ ही बडबडा रहे है, ''देवता हठी है, उस पिशाच्च के सामने कौन टिका है ? पर हाय ! क्या रुप है, कोई राजपुरुष दिखाई देते है । संन्यासी बन गये । सुंदरता, सौम्यता की तो प्रतिमा जान पडते है । इन्हें देखकर तो उस यक्ष को भी करुणा आ जाएगी ।'' एक ने फूली हुई सांस से कहा।

दूसरे ने कहा, ''अरे ! वह खून पीनेवाला शूलपाणि पशु है । उससे दया, प्रेमकी अपेक्षा करना व्यर्थ है वह पत्थर हृदय है ।'' वे अपने अपने घर चले गये । बादल जोरोंसे बरस रहे है । अंधेरा भी साथ देने आ गया । अस्थिकग्राम में शमशान शांति है । भय और आतंक से जन्मी शांति अधिक डरावनी होती है ।

खंडहर हुए मंदिर के एक भाग में महावीर ध्यान में खडे है । सामने ही शमशान खुला स्पष्ट दिखाई दे रहा है । मंदिर में जलाया गया दीया अंधेरे से अंतिम लडाई लड रहा है । वह भी कुछ ही क्षणों में दम तोड देगा ।

चारों ओर अंधेरा है एकदम सन्नाटा । सिर्फ मरघट की तरफ से किसी नदी के बहने की कल-कल ध्वनि आ रही है । शमशान में कुछ समय पूर्व मुर्दा जलाया गया था । चिता अभी भी दहक रही है । मुर्दे को जलानेवाले अंधेरा होते देख, लगता है शमशान से भय के मारे भाग गये । विशाल बरगदों की झुलती, शाखाओं जटाओंसे जलती चिता की लपटों में भूत प्रेत की परछाईयों का आभास होता । भयके भूत, प्रेतोंने मरघट में डेरा डाल रखा है । इसलिए वहाँ कोई ठहरता ही नहीं । चितासे जब-तब उठती ज्वाला में खंडहर बना मंदिर भयानक दिखाई देता । पूरे मरघट में दुर्गंध, कीचड, अस्थियाँ, सांप, बिच्छुओं का साम्राज्य है ।

लकडबग्घे, भेडिये, जंगली कुत्ते रात के अंधेरे में शिकार की खोजमें मरघट में चले आते । वे क्रूर, खून के प्यासे जंगली पशु आपस में ही लड पडते । एक दूसरे को लहूलुहान कर देते । इन हिंस्रपशु के गुर्राने, चित्कारने, नथुनों के फडकने, फुफकारने की आवाज से मरघट का वातावरण अत्यंत भयावह हो जाता है । उसमें बीच-बीचमें सियारोंकी हुआँ-हुआँ, मेंढकों का टर्राना, उल्लुओं का चिल्लाना, बरसाती आँधी तूफान से पूरा मरघट थर्रा उठता । डालियाँ टूट-टूटकर चिताओं में गिरती रहती । अग्नि तड-तड भडक उठती । चमगादड हवा में उडते हुए अग्नि के भक्ष्य बन जाते । छोटे-छोटे सैंकडों कीट-पतंग जल रही चिता में स्वयं की आहुति दे देते ।

इस भयोत्पादक वातावरण में जहाँ कठोर हृदयवाले का कलेजा भी फट जाये वहाँ निर्भययोगी महावीर इन सबके मध्य निष्कंप खडे है ।

भय का सृजन तो मनुष्य का भीतमन ही करता है। भयभीत मन कल्पना का ऐसा ताना-बाना बुनता है कि उस भयजाल में स्वयं उलझ जाता है । भय हमेशा अदृश्य-दृश्य का सृजन करता है और बुध्दि, मन, आँखें, भय की रज्जु के साथ ऐसे बंध जाते है कि फिर आभास भी सत् बन जाता है । असत्य भी सत्य मालूम पडता है । अवास्ताविक भी वास्तविक लगता है ।

यह जगत नाना घटना चक्रोंसे रुप बदलता रहता है । इस बहुरुपी बहुपर्यायी को तटस्थ रहकर ज्ञातादृष्टा बनकर ही समझा जा सकता है । नहीं तो यह अनंतपर्यायी सृष्टि मोह-माया का जाल बनती है । भयभीत मन के लिए विकटवन बन जाती है ।

वह शमशान क्रूर निशाचरों का क्रीडास्थल था । महावीर को खंडहर में खडे देख वे निशाचर भी क्षणभर ठिठक जाते । उन्हें निश्चल, निरुपद्रवी देखकर अपने कर्म में लग जाते । महावीर ज्ञाता-दृष्टा बनकर मरघट के हर दृश्य को देख रहे है । मेरे भीतर भी तो इस मरघट की तरह सबकुछ है । मैं देख रहा हूँ कितनी बार मुझे जलाया गया है । त्रिपुष्ट वासुदेव के भव में मैंने बहुत ही क्रूरकर्म किये जिसके कारण नरक में जाना पडा । फिर वहाँसे सिंह के जन्म में आया वहाँ भी हिंसा में ही लिप्त रहा, तो वापस नरक में जाना पडा ।

मैंने क्रूर कर्म किये इसलिए नरक, तिर्यंच गति में जाना पडा । जबकि सम्यक्त्व की उपलब्धि हुई थी फिर भी जो कर्म किये है उसे भोगे बिना मुक्ति नहीं । मेरी आत्मा में सम्यक्त्व की वह योग्यता है, वह उजाला है जिसने मुझे अंधेरी गतियों में डूबने से, भटकने से बचाया। आज उसी सम्यक्त्व की ज्योति के कारण मैं आत्मज्योति की ओर बढ रहा हूँ । इस सुवर्ण क्षण को खोना नहीं है । जरा सा भी प्रमाद न हो इसका ध्यान रखना है।

देह की नश्वरता, आत्मा की अमरता का ज्ञान इस शमशान में होगा । साधना में आनेवाले संकटों से सामना करने के लिए मुझे इसी शमशान से मजबुती मिलेगी । मैं पूर्व जन्मों में असंख्य बार शमशान में जलाया गया । इस जन्म में इसी का आधार लेकर बाहर आना है । मरघट मेरी मंजिल नहीं, निर्वाण ही इस जीवन का परमसत्य होगा ।

इस शमशान में जो हिंस्रपशु है इससे ज्यादा हिंस्रपशु भीतर में होते है । वे कर्मों की बिकट घाटियों

में छुपे हुए है । उन्हें वहाँसे खदेडना है, बाहर निकालना है । यह क्रूर मायावी पशु कैसे भीतर में घर किये हुए है। यह देखो उन्मत्त अहंकार रुपी हाथी चिंघाडता हुआ आ रहा है । यह क्रोधरुपी महानाग कैसे फुफकार रहा है । कितना जहरीला है अंदर में भयंकर उत्पात, उपद्रव करते है । इन्हें मैं समझ रहा हूँ ।

ध्यानयोगी महावीर ने आत्मध्यान के प्रयोग शुरु किये । श्वास-प्रश्वास को समेटकर प्राण को केंद्रित कर दिया । दृश्य संसार पीछे छूट गया । आत्मध्यान की गहराईयों में उतर गए चेतना लोक में प्रवेश किया । धीरे-धीरे चेतना का विस्तार होता गया । ओ हो ! यह इसकी विशेषता है, गुण है, यह विस्तार भी पा सकती है और संकुचित भी हो सकती है, इसी गुण के कारण यह चेतना छोटे से छोटे शरीर में और बडे से बडे शरीर में भी समा जाती है । उसके अनुरुप आकार धारण करती है । याने यह ज्योत, प्रकाश की भाँति फैलती है। मैं देखू तो सही मेरी चेतना का विस्तार कितना होता है।

महावीर ने अपनी चेतना, आत्मप्रदेशों को फैलाना शुरु किया । चेतना के इस उर्ध्वारोहण में उन्हें यह अनुभव हुआ कि चेतना के साथ कुछ ऐसा तत्व जुडा हुआ है जो चेतना को पूर्ण विकसित होने में बाधक बन रहा है । उस परतत्व के कारण ही चेतना का पूर्ण विस्तार और विकास नहीं हो पाता । यह ''पर'' अशुध्द तत्व ही बाधक है ।

चेतना में रुकावट बनी ये कर्मों की घाटियाँ है, विविध कर्म है । इनमें ऊँचाई, नीचाई है । इन कर्मो के विस्तार से चेतना सिमटती गई । चेतना के गुण और उसकी शक्ति को इन कर्मोंने ही बाँध रखा है । कर्मों की चट्टानें हटानी होगी । इन्हें चूर-चूर करना होगा । कुछ कर्म की चट्टानें कितने काल से जमी हुई है । चेतना के विस्तार से कैसे इनमें हलचल हो गई । जैसे जैसे मेरी चेतना विस्तार पाएगी, उर्ध्वारोहण करेगी, दीये की लौ की तरह वैसे वैसे इन घाटियों में स्फोट होगा । ये चकनाचूर हो जाएगी ।

इसके लिए मुझे गहरी आत्मसाधना करनी होगी। कठोर तप तपना होगा । कष्ट, उपद्रव सहने होंगे, आत्मपरीक्षा देनी होगी । यह एक समय में होनेवाली साधना नहीं है । कई वर्ष लगेंगे मुझे निरंतर सावधान रहना होगा । जागृत रहना होगा ।

मार्ग मिल गया, उसपर चलना है । अंतरध्यान से चेतना को समेटते हुए पुन: केंद्रपर आये । श्वास-प्रश्वास शुरु होते ही प्राण फिरसे शरीर में दौडने लगे। शरीर की अनुभूति हुई । संवेदना जागी तो देखता हूँ, शरीर के कई स्थानोंपर जंतुओंने काटा है, तीखे दंश किये है, खून निकल आया है, पर शरीर से परे, विरक्त हूँ । इसलिए शरीर की पीडासे मनमें कोई दुख नहीं है। चित्त में स्थिरता है, शांति है ।

आज आत्मा और शरीर का भेद समझ पाया हूँ। शरीर से भागकर कर्मोंसे मुक्ति नहीं पाई जा सकती । शरीर और आत्मा का भेदज्ञान ही कर्मोंसे मुक्ति का सही मार्ग है ।

उसी समय कानोंपर भयंकर कर्कश ध्वनि टकराई। जान पडता है शूलपाणि आ गया है । काँटे का मुद्गर हाथ में घुमाता हुआ, प्रचंड वेग से चलता हुआ और भयंकर अट्टहास, करता फट पडा, ''कौन है ?'' किसकी मौत आई है ? उसके इस उग्ररुप भयकारी, गर्जना से मरघट में जो पशु घूम रहे थे वे भाग खडे हुए । पेडोंपर जो पंछी बैठे थे वे उस काली रात्रि में दिशाहीन से उडने लगे, आपस में टकराने लगे। कुछ तो उसकी तीव्र ध्वनि से ही अपने घोंसलों से भूमिपर गिर छटपटाने लगे ।

वह मरघट पार करता हुआ, क्रोध में भुजंग बना जैसे मुझपर दृष्टि पडी उसके क्रोध की कोई सीमा नहीं रही, उसने धरतीपर पैर पटके । कलेजे को चीरकर रख दे, कानोंके पर्दे फट जाए ऐसा कोलाहल उसने शुरु किया । इसका कोई मुझपर असर न देख शमशान में से एक विकराल भुजंग उठाकर मेरे शरीरपर उछाल दिया। क्रोधसे भयभीत उस नागराज ने फण उठाकर मेरे शरीर

पर कई दंश किये । मेरा शरीर काँप उठा । पर मैंने समता भाव से उसे सह लिया । फिर पत्थर बरसाए-बिच्छुओं को इकठ्ठा कर मेरे शरीर पर डाल दिये । मिट्टी कीचड कचरे की बरसात सी मेरे शरीर पर कर दी । वह पीडा देने का हर प्रयास करता रहा । भीषण कष्ट का सामना लाता रहा । और मैं भी भीतर से उसे समता, प्यार से सहता रहा ।

निष्फल क्रोध शरीर को लक्ष्य बनाता है । शूलपाणि अपने हर प्रयत्न को व्यर्थ देख, क्रोध से भभक उठा । क्रोध के प्रचंड वेग में मुद्गर घुमाता हुआ दौडता हुआ आया और मेरे शरीर पर उस कांटेदार मुद्गर से कई प्रहार किये । शरीर पर प्रहार होते ही शरीर में ऐसी वेदना की लहर उठी जैसे हजारों चीटियोंने एक साथ काटा हो शरीर से खून निकल आया । इसे देखकर शूलपाणि क्रूरता से चित्कार उठा । लेकिन मुझे निश्चल देखकर वह देखता ही रह गया ।

वह आश्चर्य में डूब गया, देखता रहा यह आदमी किस मिट्टी से बना हुआ है ? मेरे मुद्गर के एक ही प्रहार से धराशायी हो जाते है । मेरी एक गर्जना से धडकने रुक जाती है । इसपर इसका कोई प्रभाव नहीं हुआ ? मेरे स्थान पर आनेवाला यह कोई साधारण मनुष्य नहीं हो सकता और उसमें भी मेरे प्रहारोंसे बच जाय, चूँ तक न करे, वह निश्चित सभी मनुष्योंसे भिन्न है । यह मानव नहीं है । और महावीर सोच रहे है यह मानव था, दानव क्यों बन गया ?

शूलपाणि की दानवता ने दम तोड दिया । हिंसा पहले तोडती है, अंत में स्वयं टूट जाती है । शूलपाणि का क्रोधज्वर उतर गया । वह करुणा के देवता महावीर के चरणों में विनम्र बना पश्चाताप में सिसक उठा ।

''देवता ! मैं रातभर आपको सताता रहा । आपके मुख से आह तक नहीं, जरासा भी कोई प्रतिकार नहीं। आश्चर्य है आप पहले मनुष्य है जो शत्रुता नहीं जगाते। द्वेष, क्रोध की अग्निको भडकने का कोई मौका ही नहीं देते । मेरा क्रोध, द्वेष शांत हो गया है।''

''मैं भी इंसान था । मुझे इन गाँववालोंने दानव बनाया । इनके लोभ एवं अन्याय अत्याचार ने मुझे शैतान बना दिया । महावीर शूलपाणि के अतीत को स्पष्ट देख रहे है । पूर्वजन्म में अन्याय के कारण यह इंसान होते-होते इसके द्वेष, क्रोध ने इसे दानव बना दिया।''

शूलपाणि तो अपनी धून में हाथ जोडे कहता रहा, ''मुझे आप देवता मिले ! मैं आपको वचन देता हूँ कि कहीं दूर चला जाऊँगा । वैर, शत्रुता को मन से निकालकर शांत हो जाऊँगा नहीं तो एकदिन मेरी भी हड्डियाँ अस्थिकग्राम के मरघट में ठोकरे खाएगी ।''

''देवता ! मुझे मेरे अपराधों के लिए क्षमा करे ।'' शैतान था वह इंसान बन गया । शूलपाणि भूमिपर मस्तक रखकर क्षमावीर महावीर को प्रणाम कर वहाँ से चला जाता है ।

अंधेरा हल्का पड रहा है । भोर होने में अभी समय है । महावीर के जख्मी थके हुए शरीरपर एक मुहूर्तभर निद्रादेवी उतर आई । उस निद्रावस्था में महावीर के दर्पणवत् मन में कुछ सपने उभर आए ।

(क्रमशः) ●

कडवे प्रवचन

मुनिश्री तरुणसागरजी

घर और मकान में अंतर है । घर बसाया जाता है और मकान बनाया जाता है । मकान में आदमी अकेला रह सकता है, पर घर में नहीं । घर वह है, जहाँ व्यक्ति के साथ उसकी पत्नी, बच्चे, माँ-बाप हों । घर की एक-एक ईंट से लगाव होता है । मकान का क्या ? टूटे-फूटे, अपने बाप का क्या जाता है ? घर में गहराई है । तभी तो कहते हैं ना कि आपकी बात मेरे में घर कर गई ।

कव्हर तपशील - फेब्रुवारी २०२०

❖ **पुणे पांजरपोळ ट्रस्ट, भोजापूर – प्रतिष्ठा**

पुणे-नाशिक रोड, भोजापूर, भोसरी, पुणे येथील पुणे पांजरपोळ ट्रस्ट गौशाळेमध्ये त्री देवाची स्थापना केली. यात श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ भगवान, श्री शिव-पार्वती, श्री राधा-कृष्ण या मुर्तींची प्रतिष्ठा १० जानेवारी २०२० रोजी विधीपूर्वक स्थापना करण्यात आली. यावेळी प्रतिष्ठेची विधी करताना संस्थेचे ट्रस्टी श्री. ओमप्रकाशजी रांका, श्री. राजेशजी सांकला, श्री. भवरलालजी जैन, श्री. सुहास बोरा, श्री. वस्तुपाल रांका इत्यादी मान्यवर. (बातमी पान नं. २२)

❖ **बिबवेवाडी जैन स्थानक दीक्षा महोत्सव**

बिबवेवाडी जैन स्थानक येथे कु. अर्चना चौधरी हिची दीक्षा २६ जानेवारी रोजी भव्य कार्यक्रमात संपन्न झाली. उपप्रवर्तक गौतममुनीजी म.सा., प.पू. विनयमुनीजी म.सा., प.पू. रवींद्रमुनीजी म.सा., प.पू. रमणिकमुनिजी म.सा. आदि ठाणा, प.पू. चंदनाजी म.सा., प.पू. कलावतीजी म.सा., प.पू. सत्यसाधनाजी म.सा., प.पू. प्रीतिसुधाजी म.सा. आदि ठाणा. यांच्या सान्निध्यात हजारो लोकांच्या उपस्थित संपन्न झाली. (बातमी पान नं. ९९)

❖ **प्राकृत डिक्शनरी – आठवा खंड**

जैनांना गौरवास्पद असलेला प्राकृत-इंग्रजी महाशब्दकोश गेल्या पाच वर्षांपासून सन्मति-तीर्थ संस्थेची टीम फिरोदिया होस्टेलच्या आवारात तयार करीत आहे. २०१७ साली सातवा खंड प्रकाशित झाला आणि अवघ्या दोन-अडीच वर्षाच्या कालावधीत ५०० पानांचा शानदार आठवा खंड तयार झाला. नुकतेच याचे प्रकाशन करण्यात आले. यावेळी प्रत्यक्ष काम करणारे सहा जण व त्यांना मदत करणाऱ्या १० लोकांची टीम या सर्वांचा सन्मान करण्यात आला.
(बातमी पान नं. २७)

❖ **गुंदेशा परिवार, पुणे – ५ दीक्षा**

पुणे, टिंबर मार्केटमधील जुनी पेढी होलचंद दानाजी प्रेमाजी गुंदेशा यांच्या कुटुंबातील सचिन लिलाचंद गुंदेशा, आरती सचिन गुंदेशा, कृपा सचिन गुंदेशा, विरती सचिन गुंदेशा व राजुल दीपक गुंदेशा या पाच जणांची दीक्षा १ फेब्रुवारी २०२० रोजी सुरत येथे होणार आहे. या निमित्त त्यांचा सत्कार टिंबर मार्केट व्यापारी मित्र मंडळातर्फे करण्यात आला. (बातमी पान नं. ७५)

❖ **गुरु गौतममुनि चॅरिटेबल सेंटर, पुणे**

गुरु गौतममुनि मेडिकल चॅरिटेबल ट्रस्ट, पुणे द्वारा प.पू. डॉ. गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा यांच्या सान्निध्यात डायलेसीस सेंटर, पॅथोलॉजी लॅब, मल्टी स्पेशालिटी डेंटल युनिट, एक्स रे, सोनोग्राफी सेंटर इ.चे उद्घाटन श्री. सतीशजी बनवट व बनवट परिवार तसेच श्री. ललितजी शिंगवी व शिंगवी परिवार यांच्या हस्ते १२ जानेवारी २०२० रोजी करण्यात आले. (बातमी पान नं. ८७)

❖ **श्री. घेवरचंदजी कटारिया, पुणे**

पुणे येथील श्री. घेवरचंदजी भिकमचंदजी कटारिया (आदित्य ग्रुप) यांना ऑल इंडिया जैन कटारिया फौंडेशन तर्फे श्री चैतन्यधाम तीर्थ धानप, गुजरात येथे चतुर्थ राष्ट्र संमेलनात ४ जानेवारी रोजी ''जैन

कटारिया रत्न'' सन्मान देऊन सन्मानित करण्यात आले. (बातमी पान नं. ७५)

❖ **श्री. विलासजी लोढा, अहमदनगर**
नाशिक येथील जैन सांस्कृतिक कला फौंडेशन यांनी आयोजित केलेल्या नूतन वर्ष स्वागत व हास्य कवी संमेलनात नगरचे सुपुत्र समाजसेवी श्री. विलासजी लोढा यांना समाजभूषण पुरस्काराने सन्मानित करण्यात आले. (बातमी पान नं. ७३)

❖ **श्री. चंपालालजी गांधी, पाथर्डी**
स्वातंत्र्य सैनिक संघटनेचे सचिव व श्री तिलोक जैन ज्ञान प्रसारक मंडळाचे उपाध्यक्ष श्री. चंपालालजी गांधी यांच्या सहस्रचंद्रदर्शन व अभिष्टचिंतन सोहळा संपन्न झाला. यावेळी मा. मंत्री श्री. बबनराव ढाकणे, श्री. संजय कळमकर, श्री. माधव बाबा महाराज, डॉ. मृत्युंजय गर्जे, श्री. सतीश गुगळे, श्री. अशोक बोरा यांच्या हस्ते श्री. चंपालालजी गांधी यांचा सन्मान करण्यात आला. (बातमी पान नं. ७३)

❖ **फ्लेमिंगो ट्रान्सवर्ल्ड, पुणे**
सॅमसन टुर्स ही गेली १६ वर्षे डोमेस्टीक सहली विषयक सर्व सेवा देणारी पुण्यातील अग्रगण्य संस्था असून गेली ७ वर्षे फ्लेमिंगो ट्रान्सवर्ल्ड या बॅनरखाली जगातील सर्वच देशाच्या सहलींचे आयोजन करीत आहे.

फ्लेमिंगो तर्फे १२ जानेवारी रोजी पुणे येथील आदित्य सेंटीग्रा-डेक्कनच्या ऑफिसमध्ये खास प्रवासाची हौस व इच्छा असणाऱ्यांसाठी जगातील पर्यटनासाठी प्रसिध्द असलेल्या प्रमुख देशांमधील प्रसिध्द ठिकाणे व त्याची माहिती, ऐतीहासिक महत्त्व इ. चा आँखों देखा हाल व्हीडीओ द्वारे दाखविण्यात आला. यावेळी अनेक सहलप्रेमी उपस्थित होते. (बातमी पान नं. ९५)

❖ **श्रीमती निर्मला छाजेड – अध्यक्षपदी**
रेंजहिल्स, पुणे येथील मानवमिलन संस्थेच्या महिला विभागाचा पदग्रहण समारंभ उत्साहात संपन्न झाला. मावळत्या अध्यक्षा साधना ललवानी यांनी नवनियुक्त अध्यक्षा श्रीमती निर्मला चंद्रकांतजी छाजेड यांना २०२० चे अध्यक्षपद सुपूर्द केले. यावेळी उपाध्यक्षपदी श्रीमती पुष्पाबाई बोरा यांची निवड झाली. (बातमी पान नं. ८५)

❖ **श्री. विजयकुमारजी मर्लेचा, पुणे**
पुणे येथील सुप्रसिध्द सुकांता डायनिंग हॉलचे संचालक श्री. विजयकुमारजी मर्लेचा यांना सिध्दी फाऊंडेशन तर्फे सिध्दी गौरव पुरस्कार देण्यात आला. मा. आमदार उल्हासजी पवार, श्री. विठ्ठलराव जाधव, श्री. शाहजी पाटील, सिध्दी फाऊंडेशनचे अध्यक्ष श्री. समीर खिरीड इ. मान्यवरांच्या हस्ते देण्यात आले. (बातमी पान नं. ७४)

❖ **ॲड. मंगेश लुनिया – न्यायाधीश पदी नियुक्ती**
ॲड. श्री. मंगेश सुभाषजी लुनिया यांची दिवाणी न्यायाधीश कनिष्ठ स्तर व प्रथम वर्ग न्यायदंडाधिकारी पदी निवड दिनांक २१-१२-२०१९ रोजी झाली. शांतीनगर, पुणे येथील गौतम लब्धी फाऊंडेशन तर्फे श्री. मंगेश लुनिया यांचा सन्मान उद्योगपती श्री. प्रकाशजी धारिवाल व श्री. दिलीप कटारिया यांच्या हस्ते करण्यात आला. सोबत श्री. सुभाष लुनिया, डॉ. सुराणा इ. मान्यवर.
(बातमी पान नं. ८७)

महाराष्ट्रातील जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा सर्वांत खात्रीशीर, सर्वांत सोपा व सर्वांत स्वस्त मार्ग...
जैन जागृति – जाहिरातीसाठी संपर्क करा.